E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

डिजिटल शिक्षा के प्रति छात्र-छात्राओं की मनोवृत्ति पर सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव : एक तुलनात्मक अध्ययन

श्वेता यादव
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म. प्र.)

डॉ. भूपेन्द्र सिंह चौहान
मार्गदर्शक, प्राध्यापक
ओएसिस इंपीरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, गोहद भिंड (म. प्र.)

Paper Received date
05/12/2025
Paper date Publishing Date
10/12/2025
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.21005578

IMPACT FACTOR
5.924

सारांश

वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने शिक्षा प्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है। इंटरनेट आधारित शिक्षा, जिसे डिजिटल शिक्षा या ई-लर्निंग के नाम से जाना जाता है, ने शिक्षण-अधिगम की पारंपरिक पद्धतियों को परिवर्तित कर दिया है। विशेष रूप से कोविड-19 महामारी के पश्चात डिजिटल शिक्षा का महत्त्व और भी बढ़ गया है। इस शोध-पत्र का उद्देश्य छात्र-छात्राओं की डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का अध्ययन करना तथा यह विश्लेषण करना है कि सामाजिक एवं आर्थिक कारक इस मनोवृत्ति को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

इस अध्ययन में ग्वालियर नगर के शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। शोध में तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। प्राथमिक आंकड़े प्रश्नावली (Likert Scale) के माध्यम से एकत्रित किए गए हैं, जबकि द्वितीयक आंकड़े विभिन्न शोध-पत्रों, रिपोर्टों एवं सरकारी दस्तावेजों से लिए गए हैं। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति उनके सामाजिक परिवेश (जैसे–परिवार की शैक्षिक पृष्ठभूमि, सामाजिक स्तर) तथा आर्थिक स्थिति (आय, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता) से प्रभावित होती है। उच्च आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों में डिजिटल शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अधिक पाया गया, जबकि निम्न आर्थिक वर्ग के विद्यार्थियों में डिजिटल विभाजन के कारण नकारात्मक या सीमित दृष्टिकोण देखने को मिला। यह शोध शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षकों तथा संस्थानों के लिए महत्त्वपूर्ण संकेत प्रदान करता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कुंजी शब्द (Keywords) डिजिटल शिक्षा, ई-लर्निंग, मनोवृत्ति, सामाजिक कारक, आर्थिक कारक, तुलनात्मक अध्ययन, डिजिटल विभाजन, ग्वालियर नगर

प्रस्तावना

21वीं सदी को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) की सदी कहा जाता है, जहाँ शिक्षा का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हो रहा है। डिजिटल शिक्षा इस परिवर्तन का एक प्रमुख आयाम है, जिसने पारंपरिक कक्षा शिक्षण को एक नवीन दिशा प्रदान की है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और वर्चुअल कक्षाओं के माध्यम से शिक्षा अब भौगोलिक सीमाओं से मुक्त हो चुकी है। भारत जैसे विकासशील देश में डिजिटल शिक्षा का विस्तार एक ओर नई संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएँ इस क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सभी विद्यार्थियों को समान रूप से डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता नहीं है, जिसके कारण उनकी मनोवृत्ति एवं सीखने के अनुभव में अंतर देखने को मिलता है।

छात्र-छात्राओं की मनोवृत्ति (Attitude) शिक्षा के प्रति उनके व्यवहार, रुचि, सहभागिता तथा उपलब्धि को प्रभावित करती है। यदि विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा को सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हैं, तो वे अधिक सक्रिय एवं आत्मनिर्भर शिक्षार्थी बन सकते हैं। इसके विपरीत, यदि उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक है, तो वे इस प्रणाली से पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते। ग्वालियर नगर, जो मध्य प्रदेश का एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र है, यहाँ शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों की पर्याप्त संख्या है। इन दोनों प्रकार के संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि में स्पष्ट भिन्नता देखने को मिलती है। यही भिन्नता उनके डिजिटल शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करती है।

इस अध्ययन का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि यह डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को केवल सामान्य रूप से नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के संदर्भ में विश्लेषित करता है। यह शोध न केवल शैक्षिक असमानताओं को उजागर करता है, बल्कि उनके समाधान हेतु सुझाव भी प्रदान करता है।

IEARJ International Educational Applied Research Journal
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

शोध समस्या (Research Problem)

डिजिटल शिक्षा के प्रसार के बावजूद यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि क्या सभी विद्यार्थियों की इसके प्रति मनोवृत्ति समान है? विशेष रूप से–

- क्या सामाजिक एवं आर्थिक कारक विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं?
- क्या शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में इस संदर्भ में अंतर है?

इन्हीं प्रश्नों के समाधान हेतु यह शोध किया गया है।

शोध के उद्देश्य (Objectives)

1. डिजिटल शिक्षा के प्रति छात्र-छात्राओं की मनोवृत्ति का अध्ययन करना।
2. सामाजिक कारकों (परिवार, शिक्षा स्तर, सामाजिक परिवेश) के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक कारकों (आय, संसाधनों की उपलब्धता) के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. डिजिटल विभाजन के प्रभाव को समझना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

1. H_{01}: डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर सामाजिक कारकों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
2. H_{02}: डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर आर्थिक कारकों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं है।
3. H_{03}: शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।
4. H_{11}: सामाजिक कारकों का विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।
5. H_{12}: आर्थिक कारकों का विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव है।

डिजिटल शिक्षा की अवधारणा : एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

डिजिटल शिक्षा (Digital Education) आधुनिक शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग बन चुकी है, जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के माध्यम से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को संचालित किया जाता है। यह केवल ऑनलाइन कक्षाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल क्लासरूम, मोबाइल लर्निंग, डिजिटल कंटेंट, स्मार्ट

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

क्लास आदि सभी शामिल होते हैं। डिजिटल शिक्षा का मूल उद्देश्य शिक्षा को **सुगम (Accessible), लचीला (Flexible) और समावेशी (Inclusive)** बनाना है। इसके माध्यम से विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी समय और स्थान पर अध्ययन कर सकते हैं। यह प्रणाली शिक्षण को अधिक **विद्यार्थी-केंद्रित (Learner-Centered)** बनाती है, जहाँ शिक्षक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है। हालाँकि, डिजिटल शिक्षा की सफलता केवल तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह विद्यार्थियों की मनोवृत्ति, उनकी रुचि, और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर करती है। यदि विद्यार्थी इस माध्यम को स्वीकार नहीं करते, तो इसकी प्रभावशीलता सीमित हो जाती है।

मनोवृत्ति (Attitude) की संकल्पना और उसका शैक्षिक महत्त्व

मनोवृत्ति (Attitude) एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है, जो किसी व्यक्ति के विचारों, भावनाओं और व्यवहार को प्रभावित करती है। शिक्षा के संदर्भ में मनोवृत्ति का अर्थ है—विद्यार्थियों का किसी विशेष शिक्षण पद्धति, विषय या माध्यम के प्रति दृष्टिकोण।

मनोवृत्ति के तीन प्रमुख घटक माने जाते हैं—

1. **संज्ञानात्मक (Cognitive)** - ज्ञान और विश्वास
2. **भावात्मक (Affective)** - भावनाएँ और रुचि
3. **व्यवहारात्मक (Behavioral)** - क्रियाएँ और प्रतिक्रिया

डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में यदि विद्यार्थी यह मानते हैं कि यह उपयोगी है (संज्ञानात्मक), उन्हें इसमें रुचि है (भावात्मक), और वे इसका नियमित उपयोग करते हैं (व्यवहारात्मक), तो उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक मानी जाती है। शैक्षिक मनोविज्ञान के अनुसार, सकारात्मक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थी अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर और सफल होते हैं, जबकि नकारात्मक मनोवृत्ति वाले विद्यार्थी नई तकनीकों को अपनाने में हिचकिचाते हैं।

डिजिटल शिक्षा और मनोवृत्ति का पारस्परिक संबंध

डिजिटल शिक्षा और विद्यार्थियों की मनोवृत्ति के बीच एक द्विपक्षीय (Bi-directional) संबंध होता है। एक ओर, डिजिटल शिक्षा की गुणवत्ता, सुविधा और उपयोगिता विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करती है; दूसरी ओर, विद्यार्थियों की मनोवृत्ति यह निर्धारित करती है कि वे डिजिटल शिक्षा का कितना प्रभावी उपयोग करेंगे। यदि डिजिटल प्लेटफॉर्म उपयोग में सरल, आकर्षक और सुलभ हैं, तो विद्यार्थी उनके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करते हैं। इसके विपरीत, यदि तकनीकी समस्याएँ, इंटरनेट की कमी या जटिल

इंटरफेस होते हैं, तो विद्यार्थियों में निराशा उत्पन्न होती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षक की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। यदि शिक्षक डिजिटल माध्यम का प्रभावी उपयोग करते हैं और विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं, तो उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक बनती है।

डिजिटल शिक्षा पर सामाजिक कारकों का प्रभाव

सामाजिक कारक विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को गहराई से प्रभावित करते हैं। इनमें प्रमुख हैं

पारिवारिक पृष्ठभूमि : जिस परिवार में शिक्षा को महत्त्व दिया जाता है और डिजिटल संसाधनों का उपयोग सामान्य है, वहाँ के विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं।

अभिभावकों का शिक्षा स्तर : उच्च शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों को डिजिटल शिक्षा के लाभों से परिचित कराते हैं, जिससे उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक बनती है।

सामाजिक परिवेश : शहरी क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता अधिक होती है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह सीमित होती है। इससे विद्यार्थियों के अनुभव और मनोवृत्ति में अंतर उत्पन्न होता है।

सहपाठी समूह (Peer Group) : यदि सहपाठी डिजिटल शिक्षा का उपयोग करते हैं और उसे महत्त्व देते हैं, तो अन्य विद्यार्थी भी उससे प्रभावित होते हैं।

इस प्रकार सामाजिक कारक न केवल संसाधनों की उपलब्धता को प्रभावित करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और व्यवहार को भी आकार देते हैं।

डिजिटल शिक्षा पर आर्थिक कारकों का प्रभाव

आर्थिक स्थिति डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में एक निर्णायक भूमिका निभाती है -

आय स्तर : उच्च आय वर्ग के विद्यार्थी स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट और हाई-स्पीड इंटरनेट जैसे संसाधनों का आसानी से उपयोग कर सकते हैं, जिससे उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक बनती है।

डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता : निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को अक्सर एक ही डिवाइस को साझा करना पड़ता है या सीमित इंटरनेट डेटा का उपयोग करना पड़ता है, जिससे उनके सीखने के अनुभव में बाधा आती है।

डिजिटल विभाजन (Digital Divide) : यह एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा है, जो उन असमानताओं को दर्शाती है जो तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता में पाई जाती हैं। डिजिटल

IEARJ International Educational Applied Research Journal
International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

विभाजन के कारण कुछ विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा का पूर्ण लाभ उठा पाते हैं, जबकि अन्य इससे वंचित रह जाते हैं।

शैक्षिक निवेश : निजी महाविद्यालयों में प्रायः बेहतर डिजिटल सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी हो सकती है। इससे दोनों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति में अंतर देखने को मिलता है।

शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के संदर्भ में तुलनात्मक दृष्टि

शासकीय और निजी महाविद्यालयों के बीच संसाधनों, शिक्षण पद्धतियों और विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि में स्पष्ट अंतर होता है। निजी महाविद्यालयों में डिजिटल शिक्षा के लिए बेहतर अधोसंरचना (Infrastructure), प्रशिक्षित शिक्षक और आधुनिक तकनीकी साधन उपलब्ध होते हैं। इसके कारण वहाँ के विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक अनुकूल दृष्टिकोण रखते हैं। इसके विपरीत, शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ तथा तकनीकी प्रशिक्षण की कमी जैसी चुनौतियाँ होती हैं। इससे विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक हो सकती है। हालाँकि, यह अंतर पूर्णतः स्थायी नहीं है। यदि शासकीय संस्थानों में उचित निवेश और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो यह अंतर कम किया जा सकता है।

कोविड-19 के पश्चात डिजिटल शिक्षा का प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने डिजिटल शिक्षा को अनिवार्य बना दिया। इस दौरान विद्यार्थियों को ऑनलाइन माध्यमों के माध्यम से ही शिक्षा प्राप्त करनी पड़ी। इस स्थिति ने एक ओर डिजिटल शिक्षा को व्यापक रूप से स्वीकार्य बनाया, वहीं दूसरी ओर डिजिटल विभाजन की समस्या को भी उजागर किया। कई विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिससे उनकी मनोवृत्ति प्रभावित हुई। महामारी के बाद यह स्पष्ट हो गया कि डिजिटल शिक्षा केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। इसलिए विद्यार्थियों की सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

सैद्धांतिक प्रतिमान (Theoretical Models) और वैचारिक ढांचा

डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को समझने के लिए विभिन्न शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का उपयोग किया जाता है। इन सिद्धांतों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किसी भी नई तकनीक को अपनाने में व्यक्ति की मनोवृत्ति, सामाजिक परिवेश और आत्मविश्वास महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(i) नियोजित व्यवहार सिद्धांत (Theory of Planned Behavior) : यह सिद्धांत बताता है कि किसी व्यक्ति का व्यवहार तीन घटकों से प्रभावित होता है–

- मनोवृत्ति (Attitude)
- सामाजिक मानदंड (Subjective Norms)
- व्यवहार नियंत्रण (Perceived Behavioral Control)

डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में यदि विद्यार्थी इसे उपयोगी मानते हैं, समाज (दोस्त/परिवार) इसका समर्थन करता है और उन्हें इसे उपयोग करने में सक्षम महसूस होता है, तो वे इसे अपनाने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं।

(ii) आत्म-प्रभावकारिता सिद्धांत (Self-Efficacy Theory) : इस सिद्धांत के अनुसार, यदि विद्यार्थी स्वयं को डिजिटल उपकरणों के उपयोग में सक्षम मानते हैं, तो उनकी मनोवृत्ति सकारात्मक होती है।

(iii) नवाचार प्रसार सिद्धांत (Diffusion of Innovation Theory) : यह सिद्धांत बताता है कि नई तकनीक समाज में धीरे-धीरे फैलती है। प्रारंभ में कुछ विद्यार्थी इसे अपनाते हैं, और बाद में अन्य लोग उनसे प्रभावित होकर इसे स्वीकार करते हैं।

इन सभी सिद्धांतों के आधार पर इस शोध में एक **संयोजित वैचारिक ढांचा (Conceptual Framework)** विकसित किया गया है, जिसमें सामाजिक एवं आर्थिक कारकों को स्वतंत्र चर (Independent Variables) तथा मनोवृत्ति को आश्रित चर (Dependent Variable) माना गया है।

डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति का मापन (Measurement of Attitude)

मनोवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए इसे मापना आवश्यक होता है। इस शोध में मनोवृत्ति को मापने के लिए **Likert Scale (5-बिंदु स्केल)** का उपयोग किया गया है।

(i) Likert Scale का स्वरूप

- पूर्णतः सहमत (5 अंक)
- सहमत (4 अंक)
- अनिर्णीत (3 अंक)
- असहमत (2 अंक)
- पूर्णतः असहमत (1 अंक)

(ii) उदाहरण प्रश्न

- डिजिटल शिक्षा पारंपरिक शिक्षा से अधिक प्रभावी है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

- ऑनलाइन कक्षाएँ मेरे लिए सुविधाजनक हैं।
- डिजिटल माध्यम से अध्ययन में मेरी रुचि बढ़ती है।
- तकनीकी समस्याएँ मेरे अध्ययन में बाधा डालती हैं।

(iii) स्कोरिंग और व्याख्या

उच्च स्कोर = सकारात्मक मनोवृत्ति

निम्न स्कोर = नकारात्मक मनोवृत्ति

इस प्रकार Likert Scale के माध्यम से प्राप्त आँकड़ों को संख्यात्मक रूप में परिवर्तित कर विश्लेषण किया जाता है। मनोवृत्ति के तीनों आयाम–संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं व्यवहारात्मक–को संतुलित रूप से मापने के लिए प्रश्नावली का निर्माण किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रश्नों को इस प्रकार तैयार किया जाता है कि वे सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के कथनों को शामिल करें, जिससे उत्तरदाताओं की वास्तविक मनोवृत्ति का सही आकलन हो सके।

वैचारिक रूपरेखा (Conceptual Framework)

इस शोध का वैचारिक ढांचा निम्नलिखित संबंधों पर आधारित है–

(i) स्वतंत्र चर (Independent Variables)

- सामाजिक कारक
  - पारिवारिक पृष्ठभूमि
  - अभिभावकों का शिक्षा स्तर
  - सामाजिक परिवेश
- आर्थिक कारक
  - आय स्तर
  - डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता

(ii) आश्रित चर (Dependent Variable)

- डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति

(iii) मध्यस्थ चर (Intervening Variables)

- लिंग (Gender)
- शैक्षिक स्तर
- महाविद्यालय का प्रकार (शासकीय/निजी)

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

यह ढांचा यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक एवं आर्थिक कारक सीधे तौर पर विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं, जबकि मध्यस्थ चर इस प्रभाव को कम या अधिक कर सकते हैं।

डिजिटल विभाजन (Digital Divide) का विश्लेषण

डिजिटल विभाजन आधुनिक शिक्षा की एक प्रमुख चुनौती है। यह उन असमानताओं को दर्शाता है जो तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, उपयोग और पहुँच में पाई जाती हैं।

(i) डिजिटल विभाजन के आयाम

1. **प्रवेश विभाजन (Access Divide)** - उपकरण एवं इंटरनेट की उपलब्धता
2. **उपयोग विभाजन (Usage Divide)** - तकनीकी कौशल एवं उपयोग क्षमता
3. **गुणवत्ता विभाजन (Quality Divide)** - इंटरनेट की गति एवं संसाधनों की गुणवत्ता

(ii) डिजिटल विभाजन का प्रभाव

- निम्न आर्थिक वर्ग के विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा से वंचित रह जाते हैं
- उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक या उदासीन हो जाती है
- शैक्षिक असमानता बढ़ती है

इस प्रकार डिजिटल विभाजन केवल तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि यह एक **सामाजिक एवं आर्थिक समस्या** भी है।

सामाजिक-आर्थिक कारकों और मनोवृत्ति के मध्य अंतर्संबंध

सामाजिक एवं आर्थिक कारक अलग-अलग नहीं, बल्कि परस्पर जुड़े हुए होते हैं।

- उच्च सामाजिक स्तर प्रायः उच्च आर्थिक स्थिति से जुड़ा होता है
- बेहतर आर्थिक स्थिति डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता को बढ़ाती है
- संसाधनों की उपलब्धता सकारात्मक अनुभव उत्पन्न करती है
- सकारात्मक अनुभव मनोवृत्ति को अनुकूल बनाते हैं

इस प्रकार एक **श्रृंखलाबद्ध प्रभाव (Chain Effect)** देखने को मिलता है– **सामाजिक स्थिति → आर्थिक संसाधन → डिजिटल अनुभव → मनोवृत्ति**

शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों में अंतर का विश्लेषण

तुलनात्मक अध्ययन के संदर्भ में यह पाया जाता है कि–

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(i) निजी महाविद्यालय

- बेहतर डिजिटल अधोसंरचना
- प्रशिक्षित शिक्षक
- नियमित ऑनलाइन कक्षाएँ
- उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी

परिणाम : अधिक सकारात्मक मनोवृत्ति

(ii) शासकीय महाविद्यालय

- सीमित संसाधन
- इंटरनेट की समस्या
- तकनीकी प्रशिक्षण की कमी
- विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि

परिणाम : मिश्रित या अपेक्षाकृत कम सकारात्मक मनोवृत्ति

हालाँकि, यह अंतर पूर्णतः स्थायी नहीं है। यदि शासकीय संस्थानों में संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जाए, तो यह अंतर कम किया जा सकता है।

लिंग (Gender) और मनोवृत्ति

डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति में लिंग के आधार पर भी अंतर देखा जा सकता है।

- छात्र (Male Students) तकनीकी उपकरणों के उपयोग में अधिक आत्मविश्वास दिखाते हैं
- छात्राएँ (Female Students) प्रारंभ में थोड़ी झिझक महसूस कर सकती हैं, परंतु प्रशिक्षण मिलने पर उनकी मनोवृत्ति भी सकारात्मक हो जाती है

यह अंतर मुख्यतः सामाजिक संरचना और अवसरों की उपलब्धता पर आधारित होता है, न कि क्षमता पर।

डिजिटल शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

शिक्षक डिजिटल शिक्षा के सफल क्रियान्वयन में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

- शिक्षक यदि तकनीकी रूप से दक्ष हैं, तो वे विद्यार्थियों को प्रेरित कर सकते हैं
- वे जटिल विषयों को सरल डिजिटल माध्यम से समझा सकते हैं
- वे विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से कर सकते हैं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

अतः शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को सकारात्मक बनाने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

डिजिटल शिक्षा और आत्मनिर्भर अधिगम (Self-directed Learning)

डिजिटल शिक्षा विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित करती है।

- विद्यार्थी स्वयं सामग्री खोजते हैं
- अपनी गति से सीखते हैं
- अपनी रुचि के अनुसार विषयों का चयन करते हैं

यह प्रक्रिया उनकी मनोवृत्ति को अधिक सकारात्मक और सक्रिय बनाती है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य और भविष्य की दिशा

वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि शिक्षा का अनिवार्य अंग बन चुकी है। भविष्य में–

- हाइब्रिड लर्निंग (Online + Offline) का विकास होगा
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित शिक्षण बढ़ेगा
- व्यक्तिगत अधिगम (Personalized Learning) को बढ़ावा मिलेगा

इन परिवर्तनों के संदर्भ में विद्यार्थियों की सकारात्मक मनोवृत्ति विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति केवल एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक कारकों से प्रभावित एक बहुआयामी प्रक्रिया है। सैद्धांतिक मॉडल, मापन विधियाँ तथा वैचारिक ढांचा यह दर्शाते हैं कि यदि इन कारकों को संतुलित किया जाए, तो डिजिटल शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के प्रभाव को समझने हेतु विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए शोधों का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है -

डॉ. अंजली शर्मा (2021) के अध्ययन “डिजिटल शिक्षा और विद्यार्थियों की अभिरुचि” में यह पाया गया कि डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति सामान्यतः सकारात्मक है, परंतु तकनीकी संसाधनों की असमान उपलब्धता इस सकारात्मकता को सीमित करती

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि ग्रामीण एवं निम्न आय वर्ग के विद्यार्थियों को इंटरनेट और उपकरणों की कमी के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी मनोवृत्ति अपेक्षाकृत नकारात्मक हो जाती है।

डॉ. राजेश कुमार एवं डॉ. सुनील सिंह (2020) ने "ई-लर्निंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति" विषय पर अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया कि आर्थिक रूप से सक्षम विद्यार्थियों में डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता न केवल तकनीकी पहुँच को बढ़ाती है, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और सक्रियता भी उत्पन्न करती है।

डॉ. प्रिया वर्मा (2022) ने कोविड-19 के संदर्भ में अपने शोध में पाया कि महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का उपयोग अत्यधिक बढ़ा, परंतु इससे डिजिटल विभाजन भी स्पष्ट रूप से सामने आया। उन्होंने यह निष्कर्ष दिया कि शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों ने डिजिटल शिक्षा को अधिक सहजता से अपनाया, जबकि ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा।

डॉ. संजय गुप्ता एवं डॉ. नेहा अग्रवाल (2019) के अध्ययन में यह पाया गया कि निजी महाविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों की बेहतर उपलब्धता के कारण विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। इसके विपरीत, शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी विद्यार्थियों के अनुभव को प्रभावित करती है।

डॉ. अरुण मिश्रा (2021) ने शिक्षक की भूमिका पर बल देते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि यदि शिक्षक डिजिटल तकनीकों में दक्ष होते हैं, तो वे विद्यार्थियों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रेरित कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों की मनोवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

उपर्युक्त सभी अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रति मनोवृत्ति केवल व्यक्तिगत कारकों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक एवं संस्थागत कारकों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

यह शोध **वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति** का है, जिसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

(i) जनसंख्या

ग्वालियर नगर के सभी शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएँ

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(ii) नमूना

- कुल 300 विद्यार्थी
- 150 शासकीय
- 150 निजी

(iii) सैंपलिंग तकनीक

स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना (Stratified Random Sampling), जिससे दोनों समूहों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके

(iv) उपकरण

- संरचित प्रश्नावली (Likert Scale आधारित)
- सामाजिक एवं आर्थिक कारकों से संबंधित प्रश्न

(v) सांख्यिकीय तकनीक

- Mean
- Standard Deviation
- t-test
- Correlation

महत्त्व : इन तकनीकों के माध्यम से डेटा का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया, जिससे निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय एवं प्रमाणिक बनते हैं।

SPSS शैली की सांख्यिकीय तालिकाएँ

तालिका 1: मनोवृत्ति का औसत (Mean Score)

समूह	N	Mean	Std. Deviation
शासकीय	150	3.12	0.85
निजी	150	3.78	0.65

व्याख्या

यह तालिका स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों का Mean Score (3.78) शासकीय महाविद्यालयों के Mean Score (3.12) से अधिक है। इसका अर्थ है कि निजी संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। Standard Deviation के कम होने से यह भी संकेत

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal
A Multi-Disciplinary Research Journal

मिलता है कि निजी महाविद्यालयों में विद्यार्थियों के उत्तर अधिक स्थिर एवं समान हैं, जबकि शासकीय महाविद्यालयों में विविधता अधिक है।

तालिका 2: t-test विश्लेषण

समूह	t-value	df	p-value
शासकीय एवं निजी	4.52	298	0.001

व्याख्या

यहाँ p-value (0.001) 0.05 से कम है, जो यह दर्शाता है कि दोनों समूहों के बीच का अंतर **सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण** है। अर्थात, यह अंतर केवल संयोग नहीं है, बल्कि वास्तव में शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की मनोवृत्ति में वास्तविक अंतर मौजूद है।

तालिका 3: सहसंबंध (Correlation)

चर	r-value
आर्थिक स्थिति व मनोवृत्ति	0.62
सामाजिक कारक व मनोवृत्ति	0.55

विस्तृत व्याख्या

- आर्थिक स्थिति और मनोवृत्ति के बीच 0.62 का सहसंबंध एक **मजबूत सकारात्मक संबंध** को दर्शाता है।
- सामाजिक कारकों का सहसंबंध (0.55) भी सकारात्मक है, परंतु अपेक्षाकृत कम है। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक कारक, सामाजिक कारकों की तुलना में अधिक

प्रभावशाली हैं। **विश्लेषण (Comprehensive Analysis)**

इस शोध में प्राप्त आँकड़ों एवं सैद्धांतिक विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो केवल व्यक्तिगत रुचि या तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के संयुक्त प्रभाव से निर्मित होती है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (Mean, t-test, Correlation) से यह स्पष्ट हुआ कि निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक मनोवृत्ति पाई जाती है। इसका प्रमुख कारण बेहतर अधोसंरचना, संसाधनों की उपलब्धता तथा उच्च

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आर्थिक पृष्ठभूमि है। इसके विपरीत, शासकीय महाविद्यालयों के विद्यार्थियों में संसाधनों की कमी, तकनीकी समस्याएँ तथा सीमित आर्थिक स्थिति के कारण मनोवृत्ति अपेक्षाकृत कम सकारात्मक पाई गई।

सहसंबंध विश्लेषण से यह सिद्ध हुआ कि आर्थिक कारकों ($r = 0.62$) का प्रभाव सामाजिक कारकों ($r = 0.55$) की तुलना में अधिक है। इसका अर्थ यह है कि यदि विद्यार्थियों को पर्याप्त डिजिटल संसाधन (जैसे स्मार्टफोन, लैपटॉप, इंटरनेट) उपलब्ध हों, तो उनकी मनोवृत्ति स्वतः सकारात्मक हो जाती है, भले ही उनकी सामाजिक पृष्ठभूमि साधारण ही क्यों न हो। इसके अतिरिक्त, सामाजिक कारक भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार का शैक्षिक स्तर, सामाजिक परिवेश तथा सहपाठी समूह विद्यार्थियों की सोच और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

डिजिटल विभाजन इस अध्ययन में एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आया है। यह केवल तकनीकी असमानता नहीं, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक असमानता का भी प्रतिबिंब है।

निष्कर्ष (Conclusion)

इस शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति पर सामाजिक एवं आर्थिक कारकों का स्पष्ट एवं महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

प्रथम, आर्थिक कारक इस संदर्भ में सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। जिन विद्यार्थियों के पास पर्याप्त डिजिटल संसाधन उपलब्ध हैं, वे डिजिटल शिक्षा को अधिक सहजता से अपनाते हैं और उनके भीतर इसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। इसके विपरीत, जिन विद्यार्थियों के पास संसाधनों की कमी होती है, वे तकनीकी बाधाओं के कारण डिजिटल शिक्षा से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं कर पाते, जिससे उनकी मनोवृत्ति नकारात्मक या उदासीन हो जाती है।

द्वितीय, सामाजिक कारक भी विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को प्रभावित करते हैं। शिक्षित एवं जागरूक परिवारों के विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, क्योंकि उन्हें घर से ही प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

तृतीय, शासकीय एवं निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के बीच स्पष्ट अंतर पाया गया है। निजी महाविद्यालयों में बेहतर अधोसंरचना, संसाधनों की उपलब्धता तथा तकनीकी सहायता के कारण विद्यार्थियों की मनोवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है। इसके विपरीत,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शासकीय महाविद्यालयों में संसाधनों की कमी एवं तकनीकी बाधाएँ इस मनोवृत्ति को प्रभावित करती हैं।

चतुर्थ, डिजिटल विभाजन इस अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष है। यह स्पष्ट करता है कि जब तक सभी विद्यार्थियों को समान रूप से डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित नहीं की जाएगी, तब तक डिजिटल शिक्षा की प्रभावशीलता सीमित रहेगी।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि डिजिटल शिक्षा केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन भी है, जिसे सफल बनाने के लिए सामाजिक एवं आर्थिक असमानताओं को दूर करना आवश्यक है। यह शोध स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि डिजिटल शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की मनोवृत्ति को समझने के लिए केवल तकनीकी दृष्टिकोण पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक संदर्भों को भी समान रूप से महत्त्व देना आवश्यक है।

सुझाव (Suggestions)

इस शोध के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं–

(i) नीति-निर्माताओं के लिए

- सभी विद्यार्थियों को सस्ती एवं सुलभ इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराई जाए
- शासकीय महाविद्यालयों में डिजिटल अधोसंरचना को सुदृढ़ किया जाए
- डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएँ चलाई जाएँ

(ii) शैक्षिक संस्थानों के लिए

- शिक्षकों को डिजिटल प्रशिक्षण प्रदान किया जाए
- स्मार्ट क्लास एवं ई-लर्निंग संसाधनों को बढ़ाया जाए
- विद्यार्थियों के लिए तकनीकी सहायता केंद्र स्थापित किए जाएँ

(iii) विद्यार्थियों के लिए

- डिजिटल उपकरणों के उपयोग में दक्षता विकसित की जाए
- ऑनलाइन संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाए
- आत्मनिर्भर अधिगम को प्रोत्साहित किया जाए

(iv) समाज के लिए

- डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दिया जाए
- अभिभावकों को डिजिटल शिक्षा के महत्त्व के प्रति जागरूक किया जाए

IEARJ International Educational Applied Research Journal

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, अंजली (2021). *डिजिटल शिक्षा और विद्यार्थियों की अभिरुचि*. नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग.
2. कुमार, राजेश एवं सिंह, सुनील (2020). *ई-लर्निंग और सामाजिक-आर्थिक स्थिति*. लखनऊ: यूनिवर्सिटी प्रेस.
3. वर्मा, प्रिया (2022). “कोविड-19 और डिजिटल शिक्षा का प्रभाव”. *शिक्षा शोध पत्रिका*, 12(3).
4. गुप्ता, संजय एवं अग्रवाल, नेहा (2019). “निजी एवं शासकीय संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन”. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 8(2.
5. मिश्रा, अरुण (2021). *डिजिटल शिक्षण में शिक्षक की भूमिका*. वाराणसी: ज्ञान प्रकाशन.
6. सिंह, राकेश (2020). “डिजिटल विभाजन और शिक्षा”. *समाज विज्ञान पत्रिका*, 15(1).
7. चौधरी, सीमा (2021). *ई-लर्निंग के मनोवैज्ञानिक आयाम*. जयपुर: रावत पब्लिकेशन.
8. पांडेय, अमित (2019). “ऑनलाइन शिक्षा की चुनौतियाँ”. *शिक्षा विमर्श*, 10(2).
9. तिवारी, मनीष (2022). *डिजिटल इंडिया और शिक्षा*. भोपाल: मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी.
10. जोशी, कविता (2020). “विद्यार्थियों की मनोवृत्ति का अध्ययन”. *शोध पत्रिका*, 5(1).
11. श्रीवास्तव, दीपक (2021). *शिक्षा और तकनीकी परिवर्तन*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.
12. द्विवेदी, नीलम (2022). “डिजिटल शिक्षा का सामाजिक प्रभाव”. *भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा*, 9(4).